

अनुहारिणी 1. अनुकरण करने वाली कोई आकृति
2. उपयुक्त प्रतिकृति

अनुहार्य वि. (तत्.) [अनु+हार्य] 1. जो अनुकरण करने योग्य हो, अनुकरणीय 2. जिसका अनुकरण किया जा सके जैसे- अनुहार्य भरत जीवनचरित।

अनूठा वि. (तद्.) 1. अनोखा, विलक्षण, विचित्र, अद्भुत 2. असाधारण, अनुपम 3. सुंदर।

अनूठापन पुं. (तद्.) अनूठा होने का भाव, विलक्षणता, विचित्रता, विशेषता।

अनूढ वि. (तत्.) (वह पदार्थ) जो जल-प्रवाह या वायु द्वारा प्रवाहित न होकर अपने ही स्थान पर अपक्षपण या विघटन से निक्षेपित हो गया हो। alluvial

अनूढक पु. (तत्.) अनूढ मृदा या धूल के निक्षेपों का संचय। alluvium

अनूढा स्त्री. (तत्.) स्त्री जिसका विवाह न हुआ हो, अविवाहिता।

अनूदन पुं. (तत्.) 1. किसी विषय का दूसरी भाषा में अनुवाद करना, उल्था करना 2. भाषांतरण 3. बाद में कहा गया कार्य, कथन।

अनूदित वि. (तत्.) 1. अनुवादित, भाषांतरित 2. कहा हुआ, वर्णन किया हुआ।

अनूद्य वि. (तत्.) अनुवाद के योग्य, अनुवाद्य।

अनून वि. (तत्.) [अन्+उन] 1. जो कम हल्का या घटिया किस्म का न हो 2. अधिक 3. जिसे पूर्ण अधिकार हो, समग्र।

अनूप वि. (तद्.) जिसकी उपमा न हो, अद्वितीय, बेजोड़ उदा. अरथ अनूप सुभाव सुभासा, सोइ पराग मकरंद सुभासा (मानस 1/37) पुं. (तत्.) अ पुं. (तत्.) 1. दलदल, धसान, झाबर, वह स्थान जहाँ सदा जलाधिक्य हो 2. जलबहुल स्थल में रहने वाला हाथी या भैंस।

अनूपग्राम पुं. (तत्.) 1. नदी या जलाशय के तट पर बसा हुआ ग्राम 2. जलप्राय या अधिक जल वाला वास स्थान।

अनूप नराच पुं. (तत्.) [छंद] पंचचामर वर्णिक छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह वर्ण होते हैं तथा क्रम से जगण, रगण, जगण रगण, जगण होते हैं तथा अंतिम वर्ण शुरू होता है।

अनूरु वि. (तत्.) [अन्+ऊरु] 1. जो बिना जाँघों का हो, जंघा रहित 'जरासंध अनूरु हो गया था' 2. जिसकी जंघाएँ नष्ट या विकृत कर दी गई हो पुं. सूर्य का सारथी अरुण। उषा काल, भोर का समय

अनूरुसारथि वि. (तत्.) 1. जिसका सारथि उरु (ऊँचा) रहित हो पुं. सूर्य।

अनूर्जा स्त्री. (तत्.) ऊर्जा-रहितता।

अनूर्जित वि. (तत्.) [अन्+ऊर्जित] 1. जो ऊर्जा रहित हो, अशक्त, अक्षम 2. गर्व रहित, जैसे- अनूर्जित शत्रु।

अनूर्णन पुं. (तत्.) ऊर्णित न होने की क्रिया, मृत्तिका या मृदापुंज का सूक्ष्म कणों में परिक्षेपण।

अनूर्ध्व वि. (तत्.) [अन्+ऊर्ध्व] 1. जो ऊपर की ओर न हो, नीचे 2. जो ऊँचा न हो। नीचा, जैसे- अनूर्ध्व पर्वत।

अनूर्मि वि. (तत्.) [अन्+ऊर्मि] 1. जिस जलाशय में ऊर्मियाँ न दिखती हों 2. लहरों से रहित, तरंग हीन 3. शांत स्थिर (जलवाला)।

अनूह वि. (तत्.) [अन्+ऊह] 1. जो बिना उह के सिद्ध हो, तर्क-वितर्क रहित 2. निश्चेष्ट 3. विचारहीन जैसे- अनूह सत्य।

अनृजु वि. (तत्.) [अन्+ऋजु] जो ऋजु अर्थात् सीधा, सरल या उचित न्यायसंगत या नैतिक न हो unfair

अनृण वि. (तत्.) [अन्+ऋण] 1. जो किसी का ऋणी न हो 2. जिसके पास देने के लिए कोई ऋण शेष न रह गया हो 3. कर्जदार न होना उदा. वह जीवन भर अनृण रहा।